सूचीपत्र।

---

(३०) करनाटी पत्र समय ।

(पृष्ठ ९९९ से ९३६ तक)

Nagari-Pracharini Granthamala Series No. 4.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI

Vol III.

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

WITH THE ASSISTANCE OF KUNWAR KANHIYA JU.

CANTOS XXIX TO LIV.
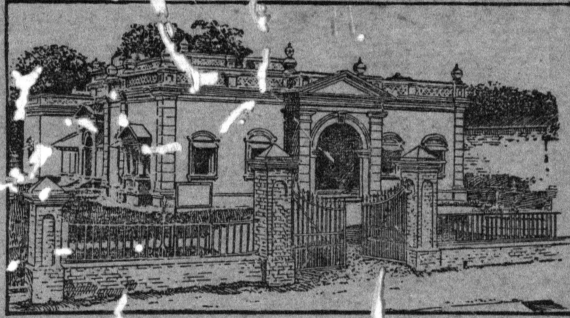
महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

तीसरा भाग

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंडया और श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

कुंवर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व्व २९ से ५४ तक

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, BENARES.

1907.

य ४) रु०] [Pr

---

(३१) पीपा युद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ ९६७ से ९९३ तक।)

---

(३२) करहे रो जुद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ ९९९ से १०१३ तक)

———*———

(३३) इन्द्रावती ब्याह प्रस्ताव।

(पृष्ठ १०१५ से १०२९ तक)

---

(३५) जैतराव युद्ध समय ।

(पृष्ठ १०३१ से १०४३ तक ।)

---

(३५) कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ १०४५ से १०५४ तक।)

———:o:———

(३६) हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव

(पृष्ठ १०५५ से १०९७ तक।)

---

(३७) पहाड़राय समय।

(पृष्ठ १०९९ से १११८ तक।)

---

[२९] सोमबध समय ।

(पृष्ठ ११२९ से पृष्ठ ११५२ तक)

---

[४०] पज्जून छोंगा नाम प्रस्ताव ।

(पृष्ठ ११५३ से पृष्ठ ११५६ तक)

---

[४१] पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ ११५६ से पृष्ठ ११६३ तक)

[४३] कैमास युद्ध

(पृष्ठ ११७९ से पृष्ठ ११९८ तक)

—:o:—

[४४] भीम वध समय।

(पृष्ठ ११९९ से पृष्ठ १२२७ तक)

(४५) संयोगिता पूर्व्व जन्म कथा।

(पृष्ठ १२२९ से पृष्ठ १२५८ तक)

[४६] विनय मंगल प्रस्ताव।

(पृष्ठ १२५९ से पृष्ठ १२७४ तक)

[४६] सुक वर्णन ।

(पृष्ठ १२७५ से पृष्ठ १२९१ तक)

——:o:——

[४८] बालुकाराय समय।

(पृष्ठ १२९३ से पृष्ठ १३२९ तक)

(४९) पंग जग्य विध्वंस प्रस्ताव।

(उंचासवां समय ।)

(५०) संजोगिता नाम प्रस्ताव ।

(पचासवां समय ।)

(५१) हांसीपुर युद्ध।

(इक्यावनवां समय।)

(५२) द्वितीय हांसी युद्ध।

(बावनवां समय।)

(५३) पज्जून महुवा प्रस्ताव।

(तिरपनवां समय।)

(५४) पज्जून पातसाह युद्ध प्रस्ताव।

(चौवनवां समय।)

अथ घघर की लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते।

(उन्तीसवां समय।)

पृथ्वीराज़ साठ हज़ार सवार लेकर दिल्ली का प्रबन्ध कैमास को सौंप कर शिकार खेलने गया, यह समाचार गज़नी में पहुंचा।

कवित्त ॥ दिल्लियपति प्रथिरांज। अवनि आषेटक [1]षिल्लय ॥
साठ सहस असवार। जाइ लग्गा धर ढिल्लय ॥
धूंनि धरा पतिसाह। रहे पेसोर [2]सुथनाय ॥
सथ्थ लिये सामंत। दिल्ली कैमास सु [3]जानय ॥
गया सु रमय प्रथिराज बर। गज्जन वै धर धूसियै ॥
दूसरो इंद्र दिल्लेस बर। सुभर सरस ढिग सुभ्भियै ॥ छं० ॥ १ ॥

दूतों ने जाकर गज़नी में शाह को समाचार दिया कि पृथ्वीराज धूमधाम के साथ शिकार खेलने को निकला है।

दूहा ॥ गई षघर अम्मान की। उट्ठ चढ़े असवार ॥
ढिल्ली धर लिजै तषत। दिसि गज्जनै पुकार ॥ छं० ॥ २ ॥
प्रथीराज सजित पवंग। है गै नर भरे भार ॥
दिल्लीपति आषेट चढ़ि। कुहकबान हथनारि ॥ छं० ॥ ३ ॥
डेरा करि पेसोर न्रप। सहस सट्ठि सुभ बाज ॥
सोन[4] पंथ विच पंथ दोइ। गल गज्जै अग्राज ॥ छं० ॥ ४ ॥

(१) ए.-षिल्लिय, ढिल्लिय। (२) ए. कृ. को.-धरत्तिय (३) ए. कृ. को.-मत्तिय। (४) ए.-पंच।

शहाबुद्दीन के भेजे हुए गुप्त चर ने पृथ्वीराज के शिकार खेलने का समाचार लेकर ग़ज़नी में जाहिर किया।

कवित्त ॥ गोरी पठए दूत । चले च्यारों चतुरन्नर ॥
लीय षर्बरि प्रथिराज । चले पच्छे गज्जन धर ॥
किय सलाम जब दूत । तबहि तत्तार सु बुभ्भिय ॥
कहा करंत दिलेस । चढ़त गिरबर धर धुज्जिय ॥
सँग [1]सत्त षट्ट सामंत चलि । तीन पाव लष्यह तुरी ॥
अनि सूर बीर नरवर सकल । उड़ी षेह धर उप्परी ॥ छं० ॥ ५ ॥
आषेटक दिन रमय । संग स्वानं घन चीते ॥
नावक पावक बिपुल । जक्कि दिन जामह जीते ॥
सहस तुरी बग्घह सु । संत मेघा कालि कंठिय ॥
सीहगोस पुच्छिय सु । लंब सिरषं सिर [2]पुट्ठिय ॥
जुर्रा [3]रु बाज कूही गुहा । धानुकी दारू धरा ॥
वहु काल भाल वदकं बिला । जम भय तव जित्तिय धरा ॥ छं० ॥ ६ ॥

सुलतान ने प्रतिज्ञा की कि जब मैं पृथ्वीराज को जीत लूंगा तभी हाथ में तसबीह (माला) लूंगा।

रमै राज आषेट । सत्त एकल बल भंजै ॥
पंच पथ्थ परिगाह । रंग अप्पन मन रंजै ॥
सहस एक बाजिच । सूर किरनह संपेषै ॥
सुनि गोरी साहाब । दाह दिल महन बिसेषै ॥
जित्तौंव जब्ब प्रथिराज कों । तब तसबी कर मंडिहौं ॥
टामंक सद्द नद्दह करों । जुगति साह तब [4]छंडिहौं ॥ छं० ॥ ७ ॥

खुरासान, रूम, हबश और बलख आदि देशों में सुलतान का सहायता के लिये पत्र भेजना।

---

(१) कृ. को. ए.-सित्त । (२) मो. को. कृ.-पुच्छिय ।
(३) ए. कृ. को.-नु । (४) मो.-ठंडिहौं ।

दूहा ॥ देस देस कग्गद फटे । पेसंगी षुरसांन ॥
रोम हबस अरु बलक में । फट्टे पहु अप्पान ॥ छं० ॥ ८ ॥

पांच लाख सेना लिए सुलतान का पृथ्वीराज की ओर आना और दूत का यह समाचार पृथ्वीराज को देना।

कवित्त ॥ सिलह लोह सज्जंत । लष्ष पंचह मिलि पष्षर ॥
कूंच कूंच धरि पैर । गुरज धारी लष गष्षर ॥
कोस दंहं दह कूच । आइ गिरवान सपत्तौ ॥
दौरि दूत दिल्लेस । जाम कर चय दिन वित्तौ ॥
मुक्काम कियौ प्रथिराज नृपं । तहां षबरि कहि दूत सब ॥
गोरी नरिंद है गै सुभर । सजि आयौं उप्पर सु अप ॥ छं० ॥ ९ ॥

चैत्र शुक्ल ३ रविवार को दो पहर के समय पृथ्वीराज ने कूच किया और वह घग्घर नदी पहुंचा।

चैत मास रबि तीज । सेत पष्पह कल चंदह ॥
भंयौ सुदिन मध्यान । चल्यौ प्रथिराज नरिंदह ॥
कटक सबर हिल्लोर । भार सेसह करि भग्गिय ॥
चढ़ि सामंत सकज्ज । नह सुर [१]अंमर जग्गिय ॥
गज रोर सोर बंधे घंटा । सिलह बीज सिलकावलिय ॥
पष्पौह लोह सहनाइ सुर । नदि घग्घर मेलान दिय ॥ छं० ॥ १० ॥

शहाबुद्दीन की सेना के कूच का वर्णन।

दूहा ॥ आयौ आतुर उप्परह । पैसंगी पतिसाह ॥
[२]पच्छांई अदल प्रबल । भग्गे राह बिराह ॥ छं० ॥ ११ ॥

बरन बरन तहां देषिये । घंटा रव गजराज ॥
सन्नाहां सन्नाह रजि । पष्षर सष्षर साज ॥ छं० ॥ १२ ॥

भई हलोहल सेन सब । पान व्यूह बर षेत ॥
लष्ष एक भर अंग मैं । छच धर्यौ सिर जैत ॥ छं० ॥ १३ ॥

(१) मो.-अमर सु जग्गिय। (२) ए.-पापीह। (३) कृ.-पच्छाहीं।

हुअ ढामंक सु दिसि बिदिसि। हुअ संनाह सनाह॥
हुअ हलोहल सुब्भरम। दोऊ दिन इक राह॥ छं०॥ १४॥

सेना का वर्णन।

चोटक॥ हुअ सद्द सु सद्दह नद्द भरं। घन घेरिक कीय सु फौज वरं॥
लष लष्ष मिले दल संमिलयं। नर भद्दव बाद्दल संमिलयं॥
छं०॥ १५

सु अग्गें हथनारि अपार सजं। तिन देषत काइर दूरि भजं॥
तिन पिठ्ठ हजार उमत्त चले। छह रित्त [1]झरंत करी तिहलें॥
छं०॥ १६॥

तिन पिठ्ठह फौज गहब्बरयं। धरि गोरिय मुट्ठ करं धरियं॥
कमनेंत अभूल सु लष्ष लियं। तिंन मध्य ततारह छत्र दियं॥
छं०॥ १७॥

लष दोय गुरज्ज स गष्षरियं। षुरसान दियं दल पलषरियं॥
बलकी उमराव सु सत्त सयं। निसुरत्तह लष्ष हुकम्म भयं॥
छं०॥ १८॥

षुरसान तनं दल उप्पटयं। मनं साइर सत्त उलट्ठ भयं॥
[2]जल बानिय [3]पानिय अद्ध सरं। लोहानिय पानिय षेत घरं॥
छं०॥ १९॥

हबसी उजबक्क हमीर भरं। कलबानिय रुम्मिय अग्ग धरं॥
सरबानि ऐराकि मुगल्ल कतीं। बहु जाति अनेक अनेक भती॥
छं०॥ २०॥

मुसलमान सेना का व्यूहवद्ध होकर नदी पार करना।

कवित्त॥ फौज बंधि सुरतान। मुष्ष अग्गे तत्तारिय॥
मधि नायक सुरतान। नील षुरसान सु भारिय॥
मोती निसुरति षान। लाल हबसी कोलंजर॥
पाचि पीठि रुस्तंम। धना बहु भांति अवर नर॥

(१) ए.-करंत। (२) ए.-जब। (३) ए.-ध्यानिय।

उत्तरिय नह गोरीस पहुं। बज्जा दस दिसि बज्जिय्या ॥
मानौं कि भइ उलटी मही। साइर [1]अंबु गरज्जिया ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना को सज्जित कर चामण्डराव को आगे किया।

दूहा ॥ दिल्लीपति फौजह रची। दियौ जैत सिर छत्र ॥
चामंड रा० अग्गै भयौ। मनौं सु गिरवर गत्त ॥ छं० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज ने अपनी सेना की गरुड़व्यूहाकार रचना की।

कवित्त ॥ फौज रची सामंत। गरुड़व्यूहं रचि गड्डिय ॥
पंष्म भाग प्रथिराज। चंच चावंड सु गड्डिय ॥
गाबरि अत्ताताइ। पांइ गोइंद सु ठड्डिय ॥
पुच्छ कन्ह चौहान। पेट पम्मारह पड्डिय ॥
सुंडाल काल अग्गो धुरे। [2]कढे दोइ कलहन्न किय ॥
चालंत बान गोरै प्रबल। मानहु अंधकि मार दिय ॥ छं० ॥ २३ ॥

दोनों सेनाओं का साम्हना होना। एक हजार मीरों का कैमास को घेरना।

तत्तारह उप्परह। चित्त चावंड चलायौ ॥
दुंहूं फौज अग्गंज। दुहूं भुज भार भलायौ ॥
मीर बानं बरषंत। धार धारा हर लग्गौ ॥
बाह्यी चामंडराइ। भूमि तत्तारह भग्गौ ॥
उत्तरे मीर सै पंच दुइ। दाहिम्मै किन्नौ दहन ॥
पहिलैं जु झुम्झ दिन पहिल कै। मच्यौ जुद्ध जानैं महन ॥ छं० ॥ २४ ॥

तत्तार खां का घायल होना। मीरों की वीरता।

भूमि पर्यौ तत्तार। मारि कमनेत प्रहारै ॥
एक घाव दोइ टूक। परे धारन मुहु धारै ॥

(१) प्र.-अंबर। (२) ए.-कढ्ढे दोई कल कियं।

[1]पुर बज्जै पुरतार। चमकि चामंड चलायौ ॥
भरै बथ्थ सिर हथ्थ। एक बहु लष्षन धायौ ॥
जब परै बुंद तब बीर हुअ। सत्त घरी साहस धरै ॥
तिनमा [2]कटक चिबिधी घड़ा। एक एक पग अनुसरै ॥ छं० ॥ २५ ॥

कैमास का घायल होना और जैतराव का आगे बढ़ कर उसे बचाना।

षान षान आषूंद। अट्ठ सहसं बहु गष्षर ॥
परिय पंति अवनेस। पारि बहु [3]अष्षर गष्षर ॥
[4]हयौ नेज चामंड। बीर द्वौ सहस लरै भर॥
हस्ति एक बिन दंत। तमह तिंन मथौ सहस कर ॥
दाहिम्मराव सुरछ्यौ पऱ्यौ। द्वौऱ्यौ जैत महा बलिय ॥
मानों कि अग्ग जज्जर बही। केलि मझ्झ रिन बट कलिय ॥
छं० ॥ २६ ॥

चावंडराव ने ऐसा घोर युद्ध किया कि सुलतान की सेना में कहर मच गया।

धषी [5]सेन सुरतान। [6]मुट्ठि छुट्टी चावद्दिसि ॥
मनु कपाट उधऱ्यौ। कूह फुट्टिय दिसि बिद्दिसि ॥
मार मार मुष किन्न। लिन्न चावंड [7]उपारे ॥
परे सेन सुरतान। जाम इक्कह परि धारे ॥
गल बथ्थ घत्त गाढ़ौ ग्रह्यौ। जानि सनेही भिंटयौ ॥
चामंडराइ करि वर कहर। गोरी दल बल [8]कुट्टयौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

जैतराव के युद्ध का वर्णन।

जैत राइ जडधार। लियौ कर दंत मुष्ष कर ॥
परे बज्र सिर धार। मनों सेना सिर उप्पर ॥

(१) ए.-पुर। (२) ए.-कमंध।
(३) मो.-परिकर, क.-पष्षर। (४) क.-पयौ, ए.-मयौ। (५) मो.-मुट्ठि।
(६) मो.-तुट्ठि। (७) ए.-उषारे। (८) ए. क. को.-छुट्टयौ।

षुरसानी बंगाल। मनहु [1]डंडूर रमावै॥
भरै पच जोगिनी। डक्क नारद बजावै॥
अपछरा गीत गावत इला। तुंबर तंत बजावहीं॥
सुरतान सेन दिक्खि बर। [2]मग्ग मग्ग जस गावहीं॥ छं०॥ २८॥

युद्ध का रङ्ग देख कर सुलतान सिर धुनने लगा, जैतराव और खुरसान खां का तुमुल युद्ध हुआ।

सिर धुन्नत पतिसाह। धाह सुनि सेना सथ्थिय॥
लुथ्थि लुथ्थि मुह धार। परे बथ्थन सों बथ्थिय॥
जम सों जम आहुरै। हूर जुट्टै दोइ घुट्टै॥
नई गंठि तन जोर्ग। हूर मुंडावलि छुट्टै॥
षुरसान जैत अब्बूधनिय। धार धार मुह कट्टिया॥
ऐसो तुं जुद्ध दिष्यौ सुन्यौ। दारुन मेछ दबट्टिया॥ छं०॥ २९॥
मनु द्वादस सूरज्ज। इथ्थ चंद्रमा महा सर॥
जिन उप्पर षलमलै। ताहि धर गोरिय सुभ्भर॥
कटक कूह किलकार। सार परमार बजायौ॥
भिरि भंज्यौ सुरतान। एक एकह मुष धायौ॥
सिर सार धार बुल्यौ प्रहर। तब दौर्‍यौ पज्जून भर॥
निसुरत्ति षान लष्पह बली। लष्प एक पाइल सुभर॥ छं०॥ ३०॥

घोर युद्ध हुआ। निसुरत खां मारा गया। दोपहर के समय पृथ्वीराज की विजय हुई।

भुजंगी॥ मचे [3]कूह कूहं, बहै सार [4]सारं। चमक्कैं चमक्कैं, करारं सु [5]धारं॥
भभक्कैं भभक्कैं, बहै रत्त धारं। सनक्कैं सनक्कैं, बहै बान [6]भारं॥
छं०॥ ३१॥
हवक्कैं हवक्कैं, बहैं सेल भेलं। हलक्कैं हलक्कैं मची ठेल ठेलं॥
कुकैं कूक फूटी, सुरत्तान ठानं। बकी जोग माया, सुरं अप्प थानं॥
छं०॥ ३२॥

(१) ए. कृ. को.-दंडूक। (२) ए.-बग्ग।
(३) ए. कृ. को.-हूक हूकं। (४) ए. कृ. को.-धारं। (५) मो.-धीरं।

बहै चन्द पट्टं, उघट्टं उलट्टं । कुलट्टा धरै अप्प, अप्पं उहट्टं ॥
दडक्कं बजै सथ्थं, मथ्थं सुटट्टं । कडक्कं बजै सैन, सेना सुघट्टं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

बहै हथ्थ परमार, सिरदार सारं । परे सेन गोरी, बहै रत्त धारं ॥
पऱ्यौ षान निसुरत्ति, सेना सहित्तं । हुऔ सूर मध्यान, दिल्ले स जित्तं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

एक लाख कालंजरों का धावा, कान्ह चौहान के आंख की पट्टी का खुलना और उसका घोर युद्ध करना ।

कवित्त ॥ कालंजर इक लष्ष । सार सिंधुरह गुड़ाकै ॥
मार मार मुष चवै । सिंघ सिंघी मुष धावै ॥
दौरि कन्ह नरनाह । पटी छुट्टी अंषिन पर ॥
हथ्थ लाइ किरवान । रुंड मांला किन्निय हर ॥
विहु बाह लष्ष लोहै परिय । जानि षरिब्बर दाह किय ॥
उच्छारि पारि धरि उपरें । कलह कियौ कि उघान किय ॥
छं० ॥ ३५ ॥

भुजंगी ॥ छुटी अंषि पट्टी, मनो उग्गि सूरं । गिरे काइरं, सूर बब्बे सनूरं ॥
लियं हथ्थ करि वार, भंजै कपारं । पियै जोगनी पच, कौयें डकारं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

बहै अच्छरी हथ्थ, अन्नेक सथ्थं । करं सूर संम्हालियै, घल्लि बथ्थं ॥
करै कज्ज साईं, समप्पै सुघट्टं । लियं कन्ह गोरी, तनं मारि थट्टं ॥
छं० ॥ ३७ ॥

कालञ्जर के टूटते ही सुलतान की सेना का भागना । कन्ह चौहान का कमान डाल कर सुलतान को पकड़ लेना ।

कवित्त ॥ कालंजर जब परिय । भगिय सेना पतिसाहिय ॥
पंच फौज एकट्ठ । कन्ह करवारि सम्हारिय ॥

(१) ए.-धरा । (२) मो.-पारं । (३) ए.-अंषनि ।
(४) ए. कृ. को.-करिवार । (५) कृ.-सम्माहिय ।

धर पारे बहु मीर । सथ्थ जब सेना भग्गियं ॥
गर घत्ती कंमान । लियौ गोरीय उछंगियं ॥
उत्तरे मीर पच्छे फिरे । हाय हाय मुष हुंकन्यौ ॥
पज्जून झेलि मुष मीर कौ । कन्ह लेइ गोरी बन्यौं ॥ छं० ॥ ३८ ॥

पज्जूनराव का मीरों को काट काट कर ढेर कर देना। कन्ह का सुलतान को पकड़ कर अपने घर ले आना।

जनु उद्यान हलाइ । पवन चल्लै ज्यौं बांधै ॥
त्यों पज्जून नरिंद । मीर जमदड्ढै सांधै ॥
परे मीर सै सत्त । बिए रन छंडिव भज्जे ॥
चम्मर छच रषत्त । तषत लुट्टे ज्यों सज्जे ॥
कन्हा नरिंद पतिसाह लै । गयौ थान अप्पन बलिय ॥
पंमार सिंघ लथ्थौ सु पय । चाव भाव कीरति चलिय ॥ छं० ॥ ३९ ॥

कन्ह का सुलतान को अजमेर लेजाना और उसे वहां किले में रखना।

[1]रहै कन्ह अजमेर । *गयौ चहुआन जैत लिय ॥
धरि अग्गोरी नरिंद । दौरि प्रथिराज जुड दिय ॥
गयौ अप्प अजमेर । †लिए पतिसाह नरिंदह ॥
दिन किज्जै महिमान । पास ठड्ढा रहै इंदह ॥
बैठारि तषंत सिर छच दिय । सभा बिराजे सु पहुंभर ॥
सिर फेरि पैर दिज्जै दुनी । यौं रप्पै पतिसाह दर ॥ छं० ॥ ४० ॥

पृथ्वीराज की जीत होने का वर्णन और लूट के माल की संख्या।

एक लष्ष बाजिच । सहस तीनह मय मत्तह ॥
लष्ष एक तोषार । तेज ऐराकी तत्तह ॥

(१) ए. को.-हरै ।　　* ए. कृ. को.-लिए पतिसाह नरिंद हिय ।
† ए. कृ. को.-तहां चहुआन जैत लिह ।

आराबं हथ्थिनी। सत्त सै सत्त सु भारिय॥
चामर छत्र रषत्तं। साहि लिन्निय धर सारिय॥
सामंत सूर बहुविधि भरिग। पट्ट घाव सु बंधियै॥
रन जीति सोधि संभर धनी। बज्जे अनत सु बज्जियै॥छं०॥४१॥

पृथ्वीराज को सब सामंतों का सलाह देना कि अबकी बार शहाबुद्दीन को प्राण दंड दिया जाय।

[1]रची सभा प्रथिराज। सूर सामंत बुलाए॥
गोयँद निढ्ढुर सलष। कन्ह पतिसाह पठाए॥
करी दंड सिर छत्र। राम प्रोहित पुंडीरह॥
रा पज्जून प्रसंग। रात्र हाहुलि हंमीरह॥
इत्तने मत्त मझ्झह मिले। हम मारैं छोरैं न अब॥
ह्वैहै न हास्य अबकें हमैं। फिर न आइहै इह सु कब॥ छं०॥४२॥

कन्ह का कहना कि अबकी पंजाब देश ले कर इसे छोड़ दिया जाय।

दिए देस पंधार। दिए पछिबानं सारं॥
कासमीर कबिलास। दिए घरटिला पहारं॥
गज्जन रष्षै देस। बियौ समपै प्रथिराजह॥
ना तरु छुट्टै नाहिं। कर हम उप्पर काजह॥
बोलयौ कन्ह नरनाह सुनि। अबकैं मारै कोइ नह॥
पंजाब दियौ छुट्टै सु अब। यह हमीर दिज्जैं हमहि॥ छं०॥ ४३॥

पृथ्वीराज का कन्ह की बात मानकर कुछ फौज के साथ लोहाना को साथ दे कर शाह को घर भेज देना।

तब बुल्यौ प्रथिराज। कहै काका त्यौं किज्जिय॥
जेता रंजक होइ। तिता लादा भरि लिज्जिय॥
जग्य कियौ पंडवन। [2]हेम काचौ उन आन्यौ॥

(१) ए. कृ. को.-करिब। (२) ए. कृ. को.-तुम।

त्यौं लभ्यौ पतिसाहि। लष्ष लोहा हम मान्यौ ॥
करि दंड कन्ह पतिसाह को। लोहानौ संथ्थै दियौ ॥
असवार सहस सथ्थें चलें। कर सिर कन्ह इती कियौ ॥छं०॥४४॥

कन्ह का अजमेर से बादशाह को दिल्ली लाना। शाह का कन्ह को एक मणि और राजा को अपनी तलवार नजर दे कर घर जाना।

करि जुहार लव कन्ह। गयौ अजमेर दुरग्गह ॥
तज्यौ कन्ह पतिसाह। बत्त सब जंपी अप्पह ॥
है पुसाल गज्जनेस। दई इक लाल सहित मनि ॥
कन्ह लेइ पतिसाह। गयौ दिल्ली सु तेतच्छन ॥
मनुहार करिय सामंत सब। तेग दई दिल्लेस बर ॥
दो अश्व करी छोड़ देय करि। [1]साहि चलायौ अप्प घर ॥
छं० ॥ ४५ ॥

सुलतान का कुरान बीच में दे कर कसम खाना कि अब कभी आप से विग्रह न करूंगा।

करि सलाम गजनेस। करिय नव निह दिल्लेसर ॥
तम रषियो हम प्रीति। बरष मन सत्तह केसर ॥
पैसंगी धर सीम। बीच पौरान कुरानं ॥
जो तक्कै तुम अबे। तबै तुम कढ़ियौ प्रानं ॥
उत्तरौं अटक तौ मैं अवर। मुसलमान नाही धरौं ॥
तुम हम सु प्रीत चलिहै बहुत। हूंन अबै ऐसी करौं ॥छं० ॥४६॥

सुलतान के अटक पार पहुंचने पर उधर से तत्तार खां का आकर मिलना।

पहु चल्यौ सुरतान। दियौ लोहानौ सथ्थै ॥
दूत च्यारि अनुसार। काल छुट्यौ सें हथ्थै ॥
गयौ बीस म्होलान। अटक उत्तरि इन पारं ॥

(१) ए. को.-चाहि, चाह।

सोवन पंथ मेलान। सहस सम्हे असवारं॥
निसुरत्ति सुतन दरिया सुतन। आइ कियौ सङ्गाम तहां॥
आजान बाह महिमान किय। चल्यौ अप्पगज्जन रहां॥छं०॥४७॥

रयसल को दूतों का समाचार देना उसका सेना ले कर अटक उतर रास्ते में रोकना।

रयसल हरी नवट्ट। सहस अट्ठारह सथ्थें॥
हेरौ करि पतसाह। पुले लग्गा इन पथ्थें॥
दूत च्यार अनुसार। कटक देष्यौ असवारह॥
कह्यौ चरन सब सथ्थ। सहस दोइ सेना सारह॥
तिन बार वज्जि चंबाल बहु। सिलह सज्जि सिरदार सहु॥
उत्तऱ्यौ कटक छोरिय अटक। नहि हुओ उग्गंत पहु॥छं०॥४८॥

गाथा॥ बज्जै पुठि चंबालं। हथ्थिय नेजं सु उप्पर फहरं॥
जानि समुद्द उहालं। किय गजनेस हुंकमयं मीरं॥ छं० ॥ ४९ ॥

लोहाना का शहाबुद्दीन को आगे भेज कर आप रयसल का मुकाबला करना।

कवित्त॥ कह्यौ साह लोहान। कोंन बज्जा बज्जाए॥
दौरि दूत तिन बेर। धनी पछिवानह धाए॥
कूच कूच पर कूच। कौन पछिवान धनी कहि॥
तब जान्यौ रयसल्ल। सेन आजान बन्यौ सह॥
पतिसाह चलौ हौं पछि रहौं। सहस डेढ़ असवार दिय॥
बंधेव फौज लोहान बर। दुहूं फौज टामंकं किय॥ छं० ॥ ५० ॥

सबेरा होते ही रयसल्ल आ पहुंचा, लोहाना से युद्ध होने लगा।

अरुन किरन परसंत। आइ पहुंच्यौ रयसल्लं॥
बज्जै बान बिहंग। जानि जुट्टा दोइ मल्लं॥
संमाही आजान। तेग मानहु हबि दिट्ठिय॥
जानि सिषर मझि बीज। कंध रैसल्लह बुट्टिय॥

लोहान तनी बज्जै लहरि। कोउ हल्लै कोउं उत्तरै ॥
परनाल रुधिर चल्लै प्रबल। एक घाव एकंह मरै ॥ छं० ॥ ५१ ॥

दूहा ॥ मुह मुह चमकै दामिनी। लोह बज्यौ लोहान ॥
इक उप्पर इक इक्क तर। लुथ्यें लुथ्य समान ॥ छं० ॥ ५२ ॥

रयसल्ल का मारा जाना सुलतान का निर्भय ग़ज़नी पहुंचना।

पयौ लुथ्थि रयसल्ल तहं। ढुंढि षेत लोहान ॥
सुबर साहं गोरी निभय। गयौ सु गज्जन थान ॥ छं० ॥ ५३ ॥

तातार खां खुरासान खां आदि मुसाहबों का सेना सहित सुलतान से आकर मिलना और बहुत कुछ न्योछावर करना।

कवित्त ॥ तत्तारिय षुरसान। सुतन गोरी पय लग्गा ॥
न्यौछावर करि षैर। बहुत मनसा भय भग्गा ॥
लष्ष एक असवार। मिल्यौ गोरी दल पष्षर ॥
लष्ष भये दरवेस। आइ पइ लग्गे गष्षर ॥
उछ्छाह भयौ गज्जन इला। गयौ मझ्झि गोरी धनिय ॥
दरबार भीर भीरन्न घन। मिलत आइ अप अप्पनिय ॥ छं० ॥ ५४ ॥

दस दिन लोहाना वहां रहा, शाह ने सात हाथी और पचास घोड़े लोहाना को दिए और पृथ्वीराज का दण्ड दिया।

डेरा दिय लोहान। करिय मनुहारि रोज दस ॥
करिय सत्त आजान। तुरिय पंचास अप्प बस ॥
इहं दिन्नौ लोहान। बियौ भेज्यौ नृप राजं ॥
लादे दाइ हजार। सत्त सै तोला साजं ॥
इक इक्कं तुरी हथ्थी सु इक। सामंतन दीनौं सबै ॥
मुह धरिय किंत्ति अनेक बिधि। सुबर सूर फेरिय जबै ॥ छं० ॥ ५५ ॥

लोहाना बिदा होकर दिल्ली की ओर चला। पृथ्वीराज ने एक एक घोड़ा और एक एक हाथी एक एक सरदारों को दिया और सब सोना चित्तौर भेज दी।

सीष दई लोहान। चल्यौ दिल्लीय पंथानं॥
संग सहस असवार। अप्प रिध वासव यानं॥
दिल्लीपति सामंत। कली छत्तीसह दप्पै॥
मिल्यौ बाह आजान। बत्त सुरतान सु अप्पै॥
इक इक्क तुरिय हथ्थी सु इक। सामंतन पठए धरैं॥
सोवन्न रासि रंजक षहर। मुक्कलियै चित्तँगपुरैं॥ छं०॥ ५६॥

चन्द कवि ने चित्तौर में आकर सब सेना आदि रावल की भेट की, रावल ने चन्द का बड़ा सम्मान किया।

गढ़ [1]चीतौड़ [2]दुरग्ग। भट्ट पठयौ परिमानं॥
लाद्दे सित्त सुरंग। सित्त लै [3]तुला प्रमानं॥
दोइ हथ्थी मय मत्त। सत्त हैबर कुल्ल राकिय॥
छच लियौ पतिसाह। जड़ित मनि मानिक साकिय॥
लै चंद चल्यौ चित्तोर गढ़। जाइ समप्पौ रावरहं॥
बहु दान दियौ रावर समर। चल्यौ भट्ट अप्पन घरंह॥ छं०॥ ५७॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके घघर नदी की लड़ाई कन्ह पतिसाह ग्रहनं नाम ओगनतीसमौ प्रस्ताव संपूरणम्॥ २९॥

(१) ए. कृ. को.-चित्रकोट। (२) ए. कृ. को.-दुरगा। (३) ए. कृ. को.-तोल, तोला।

अथ करनाटी पात्र समयौ लिख्यते ।

(तीसवां समय ।)

दूतों का दिल्ली का हाल समझ कर जैचंद से जाकर कहना।

दूहा ॥ दूत चरित दिल्ली तनौ । देषि गयौ [1]कनवज्ज ॥
चढ़त पंग सम्हौ मिल्यौ । सुबर बीर कमधज्ज ॥ छं० ॥ १ ॥
करि षुलषट सुरतान सौं । दल भग्गै सु विहान ॥
अब करनाटी देस पर । चढ़ि चल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ २ ॥

यद्दव की सेना सहित पृथ्वीराज का दक्षिण पर चढ़ाई करना। करनाटक देश के राजा का कर्नाटकी नामक वेश्या का पृथ्वीराज को नज़र करके संधि करना।

कवित्त ॥ चल्यौ सुबर चहुआन । बीर कन्नाट देस पर ॥
मिलि जद्दव बर सेन । तारि कढ्यौ सु तुंग नर ॥
दष्षिन दछिन नरिंद । सबै प्रथिराज सु गाही ॥
तिन राजन इक पाच । पठय नाइक घर थाही ॥
बर बीर जुद्ध कमधज्ज करि । भीर भगी बर बीर [2]अचि ॥
तिहि दिनां वीर पज्जून पर। षग्ग मार बोहिथ्थ [3]मचि ॥ छं० ॥ ३ ॥

करनाटकी को लेकर पृथ्वीराज का दिल्ली लौट आना।

दूहा ॥ लै आयौ नाइक सथ । करनाटी प्रथिराज ॥
जच तत्र एकठ भये । [4]सबै साज संमाज ॥ छं० ॥ ४ ॥

संवत् ११४१ में दक्षिण विजय करके पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर करनाटकी को संगीतकला में अत्यंत विद्वान केल्हन नायक को सौंप देना।

---

(१) ए.- कसवज्ज । (२) ए. क. को.-आगि ।
(३) ए. क. को.-मार्ग । (४) मो.-सज्ज कमधजहि साज ।

कवित्त ॥ संवत इकतालीस। दिवस प्रथिराज राज भर ॥
अति सामंत उभार। आइ अति भ्रम्म ढिल्लि धर ॥
दिय थानक नाइक्क। नाम केल्हन गुन देयं ॥
अति संगीत सु विद्य। कला संजुत्त सुनेयं ॥
ता सथ्थ चीय रतिरूव तन। बर चवद्द चातुर सकल ॥
दुव तीस सु लच्छित मति विमल। अति मति अगनित [1]विद्यबल ॥
छं० ॥ ५ ॥

करनाटकी के नृत्य गान की प्रशंशा सुन कर पृथ्वीराज का उस के लिये कामातुर होनां।

बाघा ॥ संभलि बत्त सुयं प्रथिराजं। अति अंगनि विद्याबल साजं ॥
कला सपूरन पूरन चंदं। पूरन हाटक बरन बिबंदं ॥ छं० ॥ ६ ॥
बानी जेम बीन कल सारं। स्वर जनु पंचम भभभ गुँजारं ॥
नष सिष रूप रूपगति उत्तं। सुभ सामंत प्रसंस प्रभुत्तं ॥
छं० ॥ ७ ॥
दरसन ताहि अवर नन दिष्षै। बासन रहल मंझ तन दिष्षै ॥
सुनि सुनि रूप कला गुन सुंदरि। जग्यौ काम न्रपति [2]उर अंदरि ॥
॥ छं० ॥ ८ ॥
अति सनमान सु नाइक दीनौ। बहुर प्रसंसन साधक कीनौ॥छं०॥९॥

पृथ्वीराज की अंतरंग सभा का वर्णन।

दुहा ॥ संझ समय अंदर महल। किय सुराज ग्रह धाम ॥
अप्प बयठ्ठौ राज तहँ। अनत सजग्गित काम ॥ छं० ॥ १० ॥

पृथ्वीराज के सभामंडप की प्रशंसा वर्णन।

नराज ॥ जयं सु अत्ति जग्गियं। सु धाम तेज तग्गियं॥
सजे सुभाल आसनं। अमोल रोहि बासनं ॥ छं० ॥ ११ ॥

(१) ए.-वैद्य। (२) मो.-अति।